

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा - षष्ठ

दिनांक -०२ -०६ - २०२१

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज हम पंखी उन्मुक्त गगन के नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में

अपनी गति, उड़ान सब भूले,

बस सपनों में देख रहे हैं

तरु की फुनगी पर के झूले।

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : सोने की जंजीरों (स्वर्ण-श्रृंखला) में बंधे होने को वजह से हम अपनी रफ्तार (गति) और उड़ने की कला (उड़ान) भूल चुके हैं। पेड़ (तरु) की टहनियों (फुनगी) और पंखों (पर) के झूलों को हम सिर्फ सपनों में ही देख पा रहे हैं।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते

नील गगन की सीमा पाने,

लाल किरण-सी चोंचखोल

चुगते तारक-अनार के दाने।

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : हमारी इच्छा यह थी कि हम नीले आसमान की सीमा (क्षितिज) तक उड़ते। अपनी लाल किरण जैसी चोंच खोलकर हम तारे (तारक) जैसे बिखरे हुए अनार के दाने खाते (चुगते) ।

होती सीमाहीन क्षितिज से

इन पंखों की होड़ा-होड़ी,

या तो क्षितिज मिलन बन जाता

या तनती साँसों की डोरी।

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : सीमाहीन (जिसकी कोई सीमा नहीं है) क्षितिज (जहाँ धरती और आसमान मिलते हैं) तक पहुँचने की हमारे पंखों में (विभिन्न पक्षियों के) प्रतियोगिता होती। या तो हम क्षितिज तक पहुँच जाते या हमारी साँस फूल जाती (तनती साँसों को डोरी) ।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का

आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,

लेकिन पंख दिए हैं, तो

आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : भले ही हमें पेड़ की टहनियों पर घोंसलों (नीड़) में न रहने दो और हमारे रहने के स्थान (आश्रय) भी नष्ट (छिन्न - भिन्न) कर डालो। पर हमें पंख दिए हैं (भगवान ने) तो हमारी बैचैन (आकुल) उड़ान में रुकावट (विघ्न) ना डालो।